RAWATSAR P.G. COLLEGE

'Sanskriti Ka Badlta Swaroop Aur AI Ki Bhumika' (SBSAIB-2025)

DATE: 25 January 2025

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)

Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

संस्कृति और नैतिकता का बदलता स्वरूप

डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, आर्य महिला टी.टी. कॉलेज, अलवर (राज.) Email: dr.pksharma2000@gmail.com

'संस्कृति किसी देश की आत्मा होती है, और नैतिकता उसका चरित्र। जब आत्मा और चरित्र संतुलित होते हैं, तभी समाज उज्ज्वल होता है।'

समाज निरंतर परिवर्तनशील है, और इसके साथ ही संस्कृति और नैतिकता भी समय के अनुसार बदलते रहते हैं। संस्कृति में व्यक्ति तथा समाज की वे क्रियाएं, उत्पादन व्यवहार, संस्कार तथा परिष्कार सम्मिलित है जिनके द्वारा व्यक्ति तथा समाज के लक्षणों को पहचाना एवं परखा जा सकता है। इस आधार पर कहा जा सकता है की संस्कृति मानव के आदिकाल से लेकर आज तक कि वह संचित निधि है जो उत्पादन और परिष्कार द्वारा निरन्तर प्रगति करती हुई एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को उत्तराधिकार स्वरूप प्राप्त होती चली आई है तथा भविष्य में भी उसकी यही गति रहेगी। एक समय था जब परंपराएँ और सामाजिक नियम व्यक्ति के आचरण को निर्धारित करते थे, लेकिन आज आधुनिकता, वैश्वीकरण और तकनीकी विकास ने इनकी परिभाषा को नया रूप दे दिया है। संस्कृति अब केवल परंपराओं तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह व्यक्तिगत पसंद, आधुनिक जीवनशैली और डिजिटल युग की आवश्यकताओं के अनुरूप ढल रही है। इसी तरह, नैतिकता भी अब समाज के बनाए नियमों तक सीमित नहीं रहकर व्यक्ति की सोच और परिस्थितियों पर निर्भर हो गई है।

संस्कृति और नैतिकताः परिवर्तन का अनिवार्य स्वरूप

'संस्कृति का दीप जलाओ, नैतिकता का गीत सुनाओ,
आधुनिकता के संग चलो, पर अपनी जड़ें न भूल जाओ।'

संस्कृति और नैतिकता किसी भी समाज की दिशा और दशा तय करने वाले महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। परंपरागत रूप से, संस्कृति, परिवार, धर्म, सामाजिक आचार–व्यवहार और नैतिक मूल्यों का एक समन्वय रही है। नैतिकता वह आधार है, जो मनुष्य के व्यक्तिगत और सामाजिक आचरण को नियंत्रित करता है। किंतु जैसे–जैसे विज्ञान, तकनीक और वैश्वीकरण का प्रभाव बढ़ा, वैसे–वैसे संस्कृति और नैतिकता के पुराने प्रतिमान टूटने लगे और नए नियम अस्तित्व में आए।

पहले संयुक्त परिवार समाज की मूल इकाई हुआ करते थे, जहाँ नैतिकता का आधार बड़ों का सम्मान, अनुशासन और समाज के प्रति कर्तव्यबोध होता था। आज यह प्रणाली एकल परिवारों में बदल चुकी है, जहाँ व्यक्ति की स्वतंत्रता और व्यक्तिगत इच्छाओं को अधिक प्राथमिकता दी जा रही है। पहले रिश्ते मर्यादा और नैतिकता के आधार पर निभाए जाते थे, लेकिन आज वे सुविधा और स्वार्थ के अनुसार परिभाषित हो रहे हैं।

परंपरागत संस्कृति और आधुनिकता के बीच संघर्ष

'परंपराएँ थक गईं, आधुनिकता की चाल तेज है,
सवाल उठते हैं अब, क्या सही और क्या विशेष है?'

संस्कृति का मूल स्वरूप हमेशा से ही सामूहिकता और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने वाला रहा है। भारतीय संस्कृति में त्यौहार, पारिवारिक रीति–रिवाज, लोक–संगीत, कला, और आध्यात्मिकता को विशेष महत्व दिया जाता था। लेकिन आज उपभोक्तावाद, वैश्विक संस्कृति और डिजिटल प्रभावों ने पारंपरिक मान्यताओं को चुनौती देना शुरू कर दिया है।

पहनावे से लेकर खान–पान तक, हर क्षेत्र में परिवर्तन देखा जा सकता है। जहां पहले पारंपरिक वस्त्रों को प्राथमिकता दी जाती थी, वहीं आज पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव ने आधुनिक पहनावे को लोकप्रिय बना दिया है। खान–पान की आदतें भी बदली हैं। फास्ट फूड और आधुनिक खान–पान ने पारंपरिक व्यंजनों को पीछे छोड़ दिया है।

बदलते समय के साथ रीति–रिवाज भी बदले हैं। पहले विवाह एक सामाजिक और धार्मिक बंधन और अंतरजातीय विवाह जैसी अवधारणाएँ पहले अस्वीकार्य थीं, लेकिन आज वे सामाजिक स्वीकृति प्राप्त माना जाता था, लेकिन आज यह अधिक व्यक्तिगत निर्णय बन चुका है। तलाक, लिव–इन रिलेशनशिप
कर रही हैं।

नैतिकता का बदलता स्वरूपः व्यक्तिगत सोच बनाम सामाजिक मूल्यों का टकराव

'संस्कारों की राह कठिन, पर सच्चाई की पहचान वही,
जो नैतिकता का दीप जलाए, वही असली इंसान सही।'

नैतिकता पहले धर्म, परिवार और समाज के नियमों से नियंत्रित होती थी, लेकिन अब यह व्यक्ति की सोच और परिस्थितियों पर निर्भर हो गई है। आधुनिक जीवनशैली में आत्मनिर्भरता और स्वतंत्र निर्णय लेने की प्रवृत्ति बढ़ी

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

है, जिससे नैतिकता की परिभाषा भी बदल गई है।

आज की युवा पीढ़ी तर्क, विज्ञान और स्वतंत्रता को नैतिकता का आधार मानती है। पहले नैतिकता का संबंध सत्य, ईमानदारी, करुणा और परोपकार से था, लेकिन आज यह व्यक्ति की व्यक्तिगत प्राथमिकताओं और परिस्थितियों पर आधारित होती जा रही है।

तकनीकी युग में नैतिकता की नई चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। सोशल मीडिया ने निजता का उल्लंघन, ट्रोलिंग और फर्जी खबरों के प्रसार को बढ़ावा दिया है। साइबर अपराध, डेटा चोरी और ऑनलाइन धोखाधड़ी आधुनिक नैतिकता की जटिल समस्याएँ बन चुकी हैं।

शिक्षा, राजनीति और कार्यस्थल पर नैतिकता और संस्कृति का प्रभाव

'संस्कृति का सूर्य चमके, नैतिकता की छांव रहे,
प्रगति की राह पर चलें, पर संस्कारों की नाव रहे।'

शिक्षा और कार्यस्थल भी संस्कृति और नैतिकता के बदलाव का केंद्र बन चुके हैं। पहले शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्ति और व्यक्तित्व निर्माण था, लेकिन अब यह अधिक व्यावसायिक हो गई है। विद्यार्थी अब केवल डिग्री और करियर पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिससे नैतिक शिक्षा और मानवीय मूल्यों की भूमिका कम होती जा रही है।

राजनीति में भी नैतिकता की गिरावट स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। पहले राजनीति समाज सेवा और आदर्शवाद पर आधारित होती थी, लेकिन आज यह सत्ता, स्वार्थ और भ्रष्टाचार से प्रभावित होती दिखती है। नैतिकता और ईमानदारी का स्थान अवसरवादिता और शक्ति–संतुलन ने ले लिया है।

संस्कृति और नैतिकता के बदलाव के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव

'संस्कृति बदले, तो बदलने दो,
पर नैतिकता की लौ जलने दो।'

संस्कृति और नैतिकता के इस परिवर्तन के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों परिणाम देखने को मिलते हैं। एक ओर, यह बदलाव समाज को अधिक प्रगतिशील और समावेशी बना रहा है। लैंगिक समानता, वैज्ञानिक सोच और व्यक्तिगत अधिकारों को बढ़ावा मिल रहा है। शिक्षा और रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं, और वैश्विक सोच को अपनाने की प्रवृत्ति विकसित हो रही है। लेकिन दूसरी ओर, नैतिक मूल्यों में गिरावट, पारिवारिक संबंधों की कमजोर होती पकड़, उपभोक्तावाद और सामाजिक अस्थिरता जैसी समस्याएँ भी बढ़ रही हैं। व्यक्ति अब अधिक आत्मकेंद्रित हो गया है, जिससे समाज में संवेदनशीलता और सहानुभूति की कमी हो रही है।

निष्कर्ष : संतुलन की आवश्यकता

'नया सवेरा तभी खिलेगा, जब अतीत का दीप जलेगा,
संस्कृति और नैतिकता संग, भारत फिर से श्रेष्ठ बनेगा।'

संस्कृति और नैतिकता का परिवर्तन स्वाभाविक प्रक्रिया है, लेकिन यदि यह असंतुलित हो जाए, तो समाज दिशाहीन हो सकता है। आधुनिकता को अपनाते हुए हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत और नैतिक मूल्यों को सहेजने का प्रयास करना चाहिए।

यह आवश्यक नहीं कि हम पूरी तरह से परंपराओं में जकड़े रहें, और न ही यह आवश्यक है कि हम पूरी तरह से आधुनिकता में खो जाएँ। आवश्यकता है संतुलन की जहाँ हम आधुनिकता के साथ कदम से कदम मिलाकर चलें, लेकिन अपनी संस्कृति और नैतिकता की जड़ों को न भूलें।

यदि समाज में नैतिकता और संस्कृति का संतुलन बना रहेगा, तो न केवल हमारा व्यक्तिगत जीवन सुखी होगा, बल्कि समाज भी प्रगति और शांति की ओर अग्रसर होगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. ओझा, श्रीकृष्ण, भारतीय संस्कृति के मूल तत्व, आदर्श प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर।
2. गुप्त, नत्थूलाल (2000) मूल्य परक षिक्षा और समाज' नमन प्रकाषन, नई दिल्ली।
3. तिवारी, अर्चना (2021) नैतिकता, शिक्षा और समाजः एक तुलनात्मक अध्ययन, राजस्थानी पब्लिकेशन, जयपुर।
4. त्रिपाठी, दुर्गादत्त (2024) संस्कृति का स्वरूप एवं परिप्रेक्ष्य. भारतीय संस्कृति प्रकाशन।
5. मिश्रा, अनिल (2022) वैश्वीकरण और संस्कृति पर प्रभाव. काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
6. शर्मा, राजेन्द्र (1998) नैतिक मूल्य शिक्षा, गुरूजी बुक कम्पनी, जवाहर नगर, जयपुर ।
7. शर्मा, सुभाष (2023) भारतीय संस्कृति और नैतिकताः ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य. संस्कृति बुक्स, नई दिल्ली।
8. शास्त्री, उमेश (1993) भारतीय संस्कृति के तत्व, अजमेरा बुक कम्पनी, जयपुर।